'परिवर्तनि संसारे' नवकलेवर उत्सव एवं रथ यात्रा

रथ यात्रा का विहंगम दृश्य

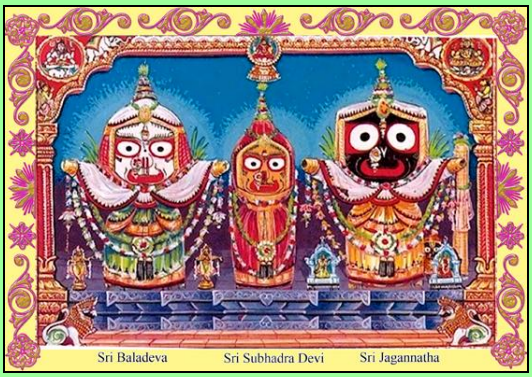

जगन्नाथ के बलराम, सुभद्रा व कृष्ण के विग्रह

जगन्नाथ पुरी का देवालय ही सम्भवतः ऐसा एक स्थान है जहां कृष्ण अपने भाई बलराम और बहन सुभद्रा के साथ पूजे जाते हैं हैं। सुभद्रा, देवकी और वसुदेव** की पुत्री थीं तथा दोनों भाईयों को अत्यंत प्रिय थीं। बलराम, सुभद्रा का विवाह अपने प्रिय शिष्य दुर्योधन से करना चाह रहे थे जब कि कृष्ण अपने प्रिय सखा अर्जुन को अपना बहनोई बनाना चाहते थे। सुभद्रा भी कृष्ण के निर्णय के पक्ष में थीं। कृष्ण की मंत्रणा से अर्जुन सुभद्रा को अपने रथ पर बैठा कर द्वारका से निकल गये। इस तथाकथित अपहरण से यादवों में बड़ा रोष उपजा; परंतु कृष्ण के समझाने पर सभी यादव सुभद्रा को वापस द्वारका ले आये और बाद में बहुत साज-सम्मान के साथ स्वयं बलराम और कृष्ण सुभद्रा को लेकर कुंती के पास पहुंचे। कुंती ने बड़े प्रेम से सुभद्रा को अर्जुन की भार्या के रूप में स्वीकार क्या। कुंती, बलराम और कृष्ण की बुआ भी थीं।

कृष्ण, बलराम और सुभद्रा के बुआ कुंती के यहाँ शुभ प्रयाण की स्मृति में प्रत्येक आषाढ़ की द्वितिया को जगन्नाथ जी की रथ यात्रा आयोजित की जाती है। इस उत्सव में कृष्ण, सुभद्रा व बलराम के विग्रह विशालकाय रथों स्थापित कर अपनी बुआ कुंती देवी के निवास पर जाते है। वहाँ कुछ दिन रहने के बाद वह पुनः अपने मंदिर में लौट आते हैं। उत्कल प्रदेश, उड़ीसा या द्ययतन ओड़ीशा के पुरी नगर में यह रथ-यात्रा एक महान पर्व के रूप में मनाई जाती है। जैसा कि चित्र में देख सकते हैं इसको देखने पूरे देश से लाखों श्रद्धालू भक्त उपस्थित होते हैं। यह विशालकाय रथ (जिनका वज़न टनों होता है) को खींचने के लिया किसी पशु या मशीन का प्रयोग नहीं किया जाता है। यह रथ भक्तों द्वारा ही खीचे जाते है। इन रथों की भव्यता और विशालता का अनुमान इसी तथ्य से लग जाता है कि 'आक्सफोर्ड शब्द-कोश' में इन विशालकाय रथों के लिये एक नया शब्द 'जगरनाट्स' (**juggernauts**) सम्मिलित कर लिया गया है।

सभी को भगवान जगन्नाथ के विग्रह का देख कर विस्मय होता है कि यह प्रतिमा अन्य प्रतिमाओं से अलग और अजब क्यों दिखती है। जगन्नाथ जी के बारे में कथा है कि भगवान के शरीर का अधजला हिस्सा प्रभास-तीर्थ के समुद्र में प्रवाहित कर दिया गया था जो बहते-बहते पुरी के समुद्र तक पहुँच गया। पुरी में इसी अवशेष को मंदिर में स्थापित करने के उपरांत ही पुरी का मंदिर 'जगन्नाथ धाम' के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

पौराणिक अंतिम संस्कार में मुखाग्नि, कपाल-क्रिया की भांति ही पिंडी का जल प्रवाह भी संस्कार का भाग है। मांसपेशियों समेत मेरु-दंड के हिस्से को ही पिंडी या 'नाभि-मण्डल' कहते हैं। यह जलकर नष्ट न होने पाये इसके पहले ही चिता को शांत कर दिया जाता है, और पिंडी को जल में प्रवाहित कर दिया जाता है। यह पिंडी देखने में एक लंबे आयायताकार लकड़ी के पटरे के आकृति की होती है।लोकगाथा के अनुसार कृष्ण के शरीर के इस अवशेष (पिंडी या नाभि-मण्डल) को द्वारका के समुद्र में 'जल-प्रवाह' किया गया था। जो कालांतर में बहते हुए पुरी के सागर तट पहुंचा जहां इसे देवालय में स्थापित किया गया। यही कारण है कि भगवान जगन्नाथ का विग्रह लंबे आयताकार पटरे के भांति दिखाई देता है।

नश्वर शरीर का हिस्सा भी नाशवान होता है। जब कृष्ण का अवशेष क्षय होना प्रारम्भ हुआ, उसे 'दारुमयी'* प्रतिमा (काष्ठ-प्रतिमा) से प्रस्थापित कर दिया गया। तब से आज तक आषाढ़ अधिमास में पुराने विग्रह को हटा कर नये ''दारुमयी' विग्रह से बदल देते हैं। विग्रह के इस नए कलेवर को धारण करने को 'नवकलेवर-उत्सव' कहते है। आषाढ़ अधिमास 12 अथवा 19 वर्ष बाद ही आता अतएव नवकलेवर उत्सव भी 12 या 19 वर्ष बाद मनाया जाता है। इस वर्ष 25वाँ (रजत जयन्ती) नवकलेवर उत्सव मनाया जा रहा है। 1996 में पिछला उत्सव मनाया गया था।

पुरी के कृष्ण भगवान जगन्नाथ के नवकलेवर उत्सव गीता के दो श्लोकों चरितार्थ करता है।

'परिवर्तनि संसारे को म्रियते को वा न जायते' यह संसार परिवर्तनशील है। जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु होनी है। कृष्ण ने मानव शरीर में अवतार लिया था तो शरीर का नाश भी हुआ।

'वासान्सि जीर्णानि यथा विहाय' जिस प्रकार कपड़े फटे-पुराने हो जाने पर बदल दिये जाते हैं वैसे ही कृष्ण की दारुमयी प्रतिमा भी जीर्ण होने पर बदल दी जाती है।

नवकलेवर उत्सव के काफी दिन पहले निश्चित स्थान पर निश्चित चिह्नों वाला दारू-वृक्ष (नीम का पेड़) ढूंढा जाता है। कृष्ण की प्रतिमा के लिए काली लकड़ी, बलराम के लिए पीली व सुभद्रा के विग्रह के लिए सफ़ेद रंग की काष्ठ का प्रयोग किया जाता है। इस पर क्रमशः कृष्ण, बलराम व उनकी बहन सुभद्रा की आकृति उकेरी जाती है। जगन्नाथ जी के विग्रह में उनके नेत्र ही सबसे आकर्षक एवं प्रभावशाली दिखते हैं। जिस रोज़ प्रतिमा के नेत्र खोले जाते हैं उस रोज़ 'नेत्रोत्सव' मनाया जाता है। 'रथ यात्रा' से तीन दिन दिन पहले पुराने विग्रह के स्थान पर नवीन विग्रह की स्थापना हो जाती है। पुराने विग्रहों को मंदिर प्रांगण में ही एक निर्दिष्ट स्थान 'कोइली बैकुंठ' में समाधि दे दी जाती है।

इस प्रकार जगन्नाथ जी का 'नवकलेवर-उत्सव' संसार की परिवर्तनशीलता को रेखांकित कर संदेश देता है कि परिवर्तन में अनुकूलन से ही जीवन की निरंतरता संभव है।

**श्रीमद्भागवत में पूजा के लिए आठ प्रकार की प्रतिमाओं का उल्लेख है-

शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती।

मनोमयी मणिमयी प्रतिमाष्टविधा स्मृता॥

(मेरी) प्रतिमा या मूर्ति आठ प्रकार की होती है- पत्थर की, लकड़ी की, लोहे(धातु) की, मिट्टी और चन्दन की। चित्रमयी, बालुकामयी, मनोमयी और मणिमयी। भागवत/एकादश/ 27/11

**हांलाकि लोकगाथा में कई अन्य कहानियाँ जैसे सुभद्रा यशोदा की पुत्री थीं (जो कंस के हाथ से छूट विंध्याचल में अष्टभुजा देवी के रूप में विराजीं), आदि आदि; पर यह साधारण तर्क पर सही नहीं प्रतीत होती हैं। सुभद्रा के विवाह के समय अर्जुन जो कि कृष्ण के समवयस्क थे की आयु लगभग 40 वर्ष रही होगी (वर्णाव्रत, द्रौपदी से विवाह, इंद्रप्रस्थ की स्थापना, अर्जुन की विश्वविजय, 12 वर्ष का वनवास जिसके अंतिम अवधि में अर्जुन की सुभद्रा से मिले थे)। इस कथा को यदि सत्य माने तो अर्जुन से मिलने के समय सुभद्रा की आयु भी 40 की रही होगी। जब कि उस काल में बालिकाएँ इतनी उम्र तक अविवाहित नहीं रहतीं थीं। अतः सुभद्रा का देवकी-वसुदेव की ही पुत्री होना उचित प्रतीत होता है।

****